

व्यावहारिक और रोजगारपरक भाषा के रूप में हिन्दी

डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव,

अध्यक्ष—हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ० शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ.प्र.

शोध सारांश

जब किसी राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्त्व और स्वीकृति देती है तथा उसके प्रति अपनी निर्भरता में इजाजा पाती है तो उस राष्ट्र की अनेक चीजें स्वतः महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतरराष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान—सदृश है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिंदी की हैसियत का भी उन्नयन कर रही है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा की गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है। आज विश्व स्तर पर हिन्दी की स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा सकती है। जब हम हिन्दी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं और यथावसर उसे विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं तब यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्वभाषा के स्वरूप का विश्लेषण कर लें। भाषा के व्यावहारिक और रोजगारपरक संदर्भ के वैश्विक परिदृश्य पर विचार करते हैं तो हमें अनेक पक्षों पर गंभीर बात करनी होती है। आज हिन्दी वैश्विक परिदृश्य में अपनी रोजगारपरक भाषा के रूप में भूमिका बखूबी निभाने के लिए अग्रसर है।

Keywords : व्यावहारिक और रोजगारपरक भाषा, वैश्विक परिदृश्य, राष्ट्रभाषा, इन्टरनेट बाजारवाद।

भाषा के प्रश्न को समझने के लिए वैश्वीकरण को समझना होगा, क्योंकि वैश्वीकरण से भाषा प्रभावित होती है? वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष संबंध बाजारवाद से है, यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत भौगोलिक दूरियों, सीमाओं, सरहदों, दीवारों के बावजूद दुनिया के देश तकनीक के माध्यम से विचारों, उत्पादों, संस्कृति के अन्य पहलुओं के आदान—प्रदान से एक दूसरे के करीब आ जाते हैं। शुद्ध तौर पर आर्थिक एकीकरण प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चोम्स्की के शब्दों में वैश्वीकरण का अर्थ अंतरराष्ट्रीय एकीकरण है। वस्तुतः यह संपूर्ण विश्व को एक गाँव में बदलने की अवधारणा में भाषा की अहम भूमिका होती है, जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा। जब बड़ा बाजार

बन जाएगा और उस बाजार में प्रयोग करने के लिए जिस भाषा का उपयोग होगा वही भाषा जीवित रह पाएगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है और राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी का प्रयोग करना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। भारत की आजादी की लड़ाई में देश को जोड़ने में हिंदी की भूमिका को देखते हुए हिंदी भाषी राज्यों के नायकों की तुलना में अन्य भाषा के राज्यों के नायको जैसे सी राजगोपालाचारी, काका कालेलकर धर्माधिकारी, स्वामी दयानंद सरस्वती गांधी जी आदि की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है। डॉ० राम मनोहर लोहिया जी ने भी संसद व बाहर सदैव हिंदी का पक्ष लिया था।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाए या नहीं यह हमेशा विवादित रहा है। भाषा के आधार पर देश में दंगे हुए एवं राज्यों का बंटवारा भी हुआ। वर्तमान में जारी नई शिक्षा नीति के ड्राफ्ट में भी अन्य राज्यों में हिंदी की भूमिका को लेकर अभी भी विवाद बना हुआ। विभिन्न विवादों के बावजूद भी हिंदी भारत व विश्व में तेजी से बढ़ती रही है। यदि हिंदी के इतिहास को अवलोकित किया जाए तो यह लगभग एक हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। यद्यपि यह अपने विभिन्न रूपों में अति प्राचीन काल से है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक 'डॉ० हरदेव बाहरी' के शब्दों में हिंदी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरंभ होता है, बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि वैदिक भाषा हिंदी है। यह इस भाषा का दुर्भाग्य रहा है कि युग युग में इसका नाम परिवर्तित होता रहा है, कभी संस्कृत तो कभी प्राकृत, कभी पाली, अब हिंदी। यदि वैदिक संस्कृत और आधुनिक हिंदी में अंतर माना जाए तो हिब्रू, रूसी, चीनी, जर्मन और तमिल आदि के भी प्राचीनतम और अद्यतन स्वरूप में पूरी तरह अंतर है, परंतु लोगों ने भाषाओं के नाम नहीं बदले और उन्हें प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक में विभाजित कर दिया। इसी तरह से यदि माना जाए तो हिंदी में भी प्रत्येक काल में केवल नाम ही बदले हैं।

'तकनीकी क्रांति' ने हिंदी को व्यावहारिक और रोजगारपरक भाषा बनने की ओर अग्रसर किया है। शिक्षा, चिकित्सा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में हिंदी की आनलाइन सामग्री ने महानगरों ही नहीं, छोटे शहरों कस्बों के बच्चों और युवाओं को प्रतिस्पर्धा में ला दिया है। आज बाजार में एजुकेशन लार्निंग और मेडिकल लार्निंग एप की बाढ़ आ चुकी है जो हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। ई-कामर्स के दिग्गजों ने भी हिंदी में एप लांच कर माना है कि बाजार बढ़ाने के लिए उसकी कितनी अहमियत है।

हिंदी दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से बोली जानी वाली भाषाओं के रूप में वृद्धि कर रही है। इसके कई वजह हैं। एक तो भारतीय संस्कृति की खूबियाँ जो दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। दूसरी तरफ एक बड़ा और सस्ता बाजार, जिसे दुनिया के सारे उद्यमी पाना चाहते हैं, तीसरी बात यह है कि दुनिया के लगभग हर देशों में हिंदी भाषियों की धमक। इन सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अब ऑनलाइन हिंदी सीखने और सुधारने के लिए कई एप आ चुके हैं। इनमें से 'लर्न' हिंदी स्पीक, 'ड्रॉप्स' और लर्न हिंदी फ्री प्रमुख हैं—हिंदी सिखाने वाला लर्न हिंदी स्पीक एप है जो बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी है। हिंदी में बातचीत के दौरान अगर कोई गलती होती है, तो यह सही शब्द के बारे में बताता है। इसमें भाषा को बेहतर करने के लिए हिंदी व्याकरण भी दिया गया है। इसमें चैट बॉट गर्ल माडलों के साथ हिंदी के वाक्यों की प्रैक्टिस की सुविधा भी मिलती है। अगर हिंदी फ्रेज का गलत उच्चारण करते हैं, तो यहाँ तुरन्त फीड बैक मिलता है। 'ड्रॉप्स' एप हिंदी सीखने वालों के लिए यूनीक एप है। इसमें शब्दों को जानने और उसे याद रखने के लिए इलस्ट्रेटेड ग्राफिक्स का इस्तेमाल किया गया है। यह एप केवल हिंदी शब्दों की प्रैक्टिस के लिए है। इसमें विभिन्न टापिक्स से जुड़े 1700 से अधिक शब्द दिये गये हैं। 'लर्न हिंदी फ्री' हिंदी से जुड़े 9000 से अधिक कॉमन वर्ड और फ्रेज दिए गये हैं, साथ ही आडियो की सुविधा भी है। इसमें हिंदी के पाठों को कटेगरी और सब कटेगरी में बाँटा गया है। साथ ही क्विज गेम भी खेल सकते हैं जो हिंदी इम्प्रूव करने में मदद करता है। इसमें 32 भाषाओं को हिंदी में अनुवाद करने की सुविधा दी गयी है।

हिंदी के प्रति अपने समर्पण भाव की कहानियाँ तो आपने सुनी होगी। लेकिन विदेशियों का हिंदी के प्रति समर्पण भाव जानने के बाद

शायद ही आपको विश्वास हो। डॉ० यासमीन सुल्ताना नकबी जो कि ओसाका विश्वविद्यालय जापान में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर हैं, वे जापान के एक हिन्दी प्रोफेसर श्री कोमा कात्सुरों के हिन्दी के प्रति निःस्वार्थ और समर्पण पर प्रकाश डालती हुई कहती है कि— “ प्रो० कोमा कात्सुरों ओसाका विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष थे। वह उर्दू, हिन्दी, फारसी और अंग्रेजी पर समान अधिकार रखते थे। जापानी उनकी मातृभाषा है— जापानी छात्रों की समस्यायें भारतीय शब्दकोश से नहीं हल होती थी। तब प्रो० कोमा के मन में एक ख्याल आया कि हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने के लिए क्यों न एक शब्दकोश तैयार किया जाए। उनका सपना धीरे-धीरे साकार होने लगा। दृढ़ निश्चय के साथ शब्दों का चयन शुरू हो गया। उन्हें पत्नी का भी सहयोग मिलने लगा। इसके निर्माण में कई दशक लग गए। इस कार्य में प्रो० कोमा के शिष्य ताकाहाशी ने अंतिम रूप देने में उनका पूरा सहयोग किया। 1439 पृष्ठों का इस शब्दकोश में शब्द और अर्थ को समझाने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को भी बड़ी सहजता से समझा जा सकता है। इस शब्द कोश में 270507, मुहावरे, 486 कहावते 6556 अंग्रेजी शब्द तथा 12324 अन्य शब्दों का प्रयोग किया गया है। साथ ही 2500 वनस्पतियों के नाम दिए गए हैं। जापान में छपाई बहुत मंहगा है। उन्होंने अपना घर बेच दिया, जिस घर में बैठकर उसका निर्माण किया था। जापान के मशहूर प्रकाशन 'ताईशूकेन शीतेन' द्वारा 2006 में इस दुर्लभ शब्दकोश का प्रकाशन हुआ। शब्दकोश का एक-एक अक्षर यह प्रमाणित करता कि प्रो० कोमा ने कितनी मेहनत की है। मूल शब्द जिस भाषा का है वह उसी में है।”

आज विश्व में हिन्दी अबाध गति से विस्तार ले रही है। लोगों को इसके प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इसके बढ़ते प्रभाव ने दुनिया को इस पर सोचने-विचार करने पर मजबूर किया है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी ने 900 से ज्यादा हिन्दी के

शब्दों को अपने पृष्ठों में जगह दी है। इस पर प्राकश डालते हुए आक्सफोर्ड डिक्शनरी की 'वर्ल्ड इंग्लिश एडीटर' डेनिका सालाजार कहती हैं— “अब तक हिन्दी के 900 शब्दों को लिस्ट में शामिल किया गया है। आक्सफोर्ड के मार्च संस्करण में हिन्दी का शब्द 'चड़्डी' इंग्लिश शब्दों की लिस्ट में शामिल किया गया है, इसी तरह बापू सूर्य नमस्कार और अच्छा शब्द भी इस शब्दकोश में जगह बना चुके हैं। सन् 2017 ई० में करीब 70 भारतीय शब्द आक्सफोर्ड में शामिल किए। इनमें 33 हिन्दी के थे। सन् 2017 ई० में 'नारी शक्ति' और सन् 2018 ई० में 'आधार शब्द' को 'हिन्दी ऑफ द ईयर' के खिताब से नवाजा गया था।”

साहित्य के क्षेत्र में अमेरिका, मारीसश, कनाडा, चीन, जापान, ट्रिनीनाड, टोबैको सहित अनेक देशों के रचनाकारों ने हिन्दी को स्मृद्धि बनाने और विकास करने में अपना योगदान दिया है। विश्व में हिन्दी की स्थिति को स्पष्ट करते हुए डॉ० यासमीन सुल्ताना नकबी कहती हैं कि “ विश्व स्तर पर देखा जाए तो अमेरिका में हिन्दी प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी है। दूसरा स्थान जापान का है। तीसरा जर्मनी का जहाँ संस्कृत का भी बाहुल्य है। जापान में हिन्दी किसी दबाव में नहीं पढाई जाती। छात्र अपनी स्वेच्छा से पढ़ता है। एक-एक विभाग में कई-कई योग्य प्रोफेसर नियुक्त किए जाते हैं। हर विभाग में एक भाषा विशेषज्ञ होता है। मैं भारत से हिन्दी विभाग के प्रोफेसर के तौर पर ओसाका विश्वविद्यालय गई थी।”

विदेशों में आज हिन्दी जहाँ फल-फूल रही है, वहाँ 21वीं सदी में भी अपने देश में धड़ेबदी और सियासत का शिकार हुई है। यह हिन्दी की विडम्बना ही कही जाएगी कि अमेरिका, कनाडाई, चीनी, जापानी जैसे विदेशी जिनकी मात्र भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं के द्वारा हिन्दी के विकास में अपना पूर्ण सहयोग दिया जा रहा है।

वहीं अपने स्वदेश में कन्नड़, तमिल, मलियाली, मिजो, नागा, कुकी, आदि भाषियों द्वारा सिर्फ इसलिए विरोध किया जाता है कि कहीं अपनी सियासत फीकी न पड़ जाए। इन्हें सझमना होगा कि हिन्दी के विकास में ही सभी भारतीय भाषाओं का विकास जुड़ा है। अगर हिन्दी का लाभ विदेशी ले रहे हैं, तो भारतीय भाषाओं को भी लेना चाहिए। हमें अपने अतीत की तरफ झांकना होगा। दुनिया का महान धर्म बौद्ध जिसकी जन्म स्थली भारत रही है, लेकिन आज इसी विरोध के चलते वह अपने जन्म स्थान पर मर चुका हैं, और जिन देशों में विस्तृत है वहाँ आज भी शान्ति है। जहाँ दुनिया दहशत गर्दी फिरका परस्ती, नस्लभेद, जाति वर्ण, मजहबी फसाद में ग्रसित है, वहीं चीन, जापान, थाईलैण्ड, ताइवान, सिंगापुर, वियतनाम कम्बोडिया जैसे बौद्ध धर्म वाले अनेक देशों में यह बीमारी नहीं दिखती। इससे सीख लेते हुए भारतवासियों को हिन्दी का विरोध त्यागना होगा। हिन्दी दुनिया की एक महान विस्तृत भाषा है। इसकी आत्मा महान है। उदारता ऐसी है कि किसी भी भाषा का विरोध, नहीं करती। जो भी संस्कृतियां हिन्दी के नजदीक आयीं, उनकी शब्दों और बोलियों को आतिथ्य दिया, स्वीकार किया। सभी भाषाओं को भी इसके महत्त्व को स्वीकार करना होगा। हिन्दी की महानता को इसी से जाना जा सकता है कि इसने दुनिया की हर प्रमुख भाषाओं के शब्दों को अपने शब्दकोशों में उचित सम्मान दिया है। किसी शब्द को विदेशी कह नफरत नहीं किया। 'वसुधैव कौटुम्बकम्' ही हिन्दी का संस्कार है।

संदर्भ—सूची

1. प्रसाद डॉ० विनोद कुमार—भाषा और प्रौद्योगिकी—वाणी प्रकाशन—21ए, दरियागंज, नई दिल्ली—110002, प्रथम संस्करण—1999
2. श्रीवास्तव रवीन्द्रनाथ, भाषाई अस्मिता और हिन्दी, द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996
3. नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 15 जुलाई 2007
4. बाहरी डॉ० हरदेव, हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप, किताब महल, संस्करण 2009
5. हिन्दुस्तान दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, 14 सितम्बर 2019
6. अमर उजाला, दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रयागराज, संपादकीय, पृष्ठ, 14 सितम्बर 2019
7. दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रयागराज, 14 सितम्बर 2019
8. दैनिक जागरण, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, प्रयागराज, 16 सितम्बर 2019, सप्तरंग, पृष्ठ, साहित्यिक पुनर्नवा।
9. वार्षिक रिपोर्ट रजिस्ट्रार ऑफ—न्यूज पेपर्स फॉर इण्डिया, 2016—17, 15 दिसम्बर 2017